सत्यनाम

श्री कबीर कृष्ण गीता

और

श्री कबीर भजनामृत वृष्टि.

सब कर्त्ताके कर्त्ता, सब देवनके तार;
सकल मूल सत्त साहेब, सो कबीर औतार.

बरसठीके कबीर पन्थी साधू मंगलदासजीकी आज्ञानुसार सुरत जदाखाडीकी जग्याके सत्तलोकवासी महन्तश्री स्वामी गंगादासजी गुरु गोबरधनदासजीके शिष्य

माष्टर हरकिशनदास भाईचंद कबीरपंथीने

सुरत

जैन विजय प्रिन्टींग प्रेसमें छपवाकर प्रसिद्ध किया.

संवत १९७० प्रत १००० सन १९१४

दाम रुपिया एक.